पंचम अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित देशकाल - वातावरण'

पंचम अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित देशकाल-वातावरण'

प्रस्तावना : - वातावरण का अभिप्राय किसी देश, समाज एवं जाति के आचार-विचार, उसकी सभ्यता एवं संस्कृति, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण है। उपन्यास में किसी विशेष देश, समाज एवं जाति को ही वातावरण के रूप में उपस्थित किया जाता है और उस देश समाज या जाति की समस्त विशेषताएँ चित्रित की जाती है। इससे उपन्यास की स्वाभाविकता एवं सत्यता की अभिवृद्धि होती है। यहाँ तक की उस देश की प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन भी औपन्यासिक कौशल के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार वातावरण की अनेक विशेषताएँ होती हैं, जिनका पालन करना उपन्यासकार के लिए उपन्यास की स्वाभाविकता की रक्षा के लिए अनिवार्य सा हो जाता है। वातावरण में यथार्थ का रंग होना चाहिए।

"प्राय: उपन्यासकार अपने औपन्यासिक कौशल से युग, समाज एवं जाति विशेष कर ऐसा सजीव वातावरण उत्पन्न कर देता है कि उस युग, समाज या जाति का पूर्ण इतिहास उपन्यासों के साँचे में ढलकर पाठकों की आँखों के सम्मुख उपस्थित हो जाता है और सबसे बड़ी बात तो यह होती है, कि इतिहास होते हुए भी वह विवरण इतिहास न होकर सामाजिक, राजनीतिक या ऐतिहासिक उपन्यास ही होता है।"[1]

वातावरण के दो रूप होते हैं - सामाजिक और भौतिक। सामाजिक वातावरण कथावस्तु की प्रभावशीलता को गहन रूप प्रदान करने एवं प्रभाव ग्राहिता की अभिवृद्धि के लिए सामाजिक वातावरण का उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक वातावरण पात्रों की मानसिक परिवर्तनशीलता के स्पष्टीकरण के लिए प्रयोग में सिरजा जाता है।

"वातावरण की स्थानीयता से अभिप्राय वातावरण में उन तत्वों के समावेश से होता है जो किसी स्थान विशेष की सारी बातों का विवरण प्रस्तुत करती है। उस स्थान विशेष की भाषा, संस्कृति, लोकव्यवहार, मुहावरे आदि का प्रयोग एवं सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण इस स्थानीयता की रक्षा के लिए किया जाता है।"[2]

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 99.
2. वही, पृ. 99, 100.

5.1. 'कल्लो' उपन्यास में चित्रित परिवेश :

"जिस प्रकार प्राण को अस्तित्व प्रदान करने के लिए शरीर की रचना होती है। जिसमें न जाने कितने विधायक तत्व समन्वित होते है, उसी प्रकार वर्णित घटनाओं, पात्रों और उनके कार्य-कलापों के सहयोग से निर्मित उपन्यास रचना, कथ्य अथवा प्रतिपाद्य को अस्तित्व प्रदान करती है। घटनाओं और पात्रों उनके कार्य-कलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने का कार्य उपन्यास में देशकाल और वातावरण के द्वारा ही संभव हो जाता है।"[1]

सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास का प्रकाशन स्वातंत्र्योत्तर सन 1995 में हुआ है। इस उपन्यास में चित्रित कहानी का घटनास्थल हिमाचल प्रदेश के एक गाँव का है, लेकिन उस गाँव के नाम का उल्लेख लेखक ने कहीं भी नहीं किया है। इस उपन्यास में लेखक ने हिमाचल प्रदेश के वातावरण सृष्टि को अंत तक बनाया रखा है। उपन्यास में हिमाचल प्रदेश के ऊँचे-ऊँचे पर्वत, छोटे-छोटे चश्में, चारों ओर की हरियाली का चित्रांकन दिखाई देता है। उपन्यास की नायिका 'कल्लो' (कली) का भोलेपन भी लेखक ने अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया है। उपन्यास का नायक युवक (परदेसी) के द्वारा गाँव में अस्पताल तथा डाकखाने की सुविधा करवाना, दो-तीन गाँवों को लेकर सडकों का निर्माण करवाना, बच्चों के लिए स्कूल खोलना आदि कार्य करने के लिए युवक को गाँव के सभी लोग बहुत मदद करते है। इससे उस गाँव में ये सारी सुविधाएँ बहुत जल्दी आ जाती है। युवक जैसे गाँव में सुधार करनेवाले लोग हमारे समाज में बहुत ही कम दिखाई देते है।

ग्रामजीवन में रहनेवाले लोगों का खान-पान उपन्यास में वातावरण की निर्मिति में अनुकूल बन पडा है। युवक (परदेसी) जब कल्लों के घर रहने लगता है, तब वह उससे प्रेम करने लगती है। और वह उसके लिए अलग-अलग प्रकार के व्यंजन बनाती है। जैसे- "भटूरू और आलू का साग। चावल, अरबी की सब्जी, अरहर की खट्टी दाल, अनार दाना, पुदीना की चटनी।"[2] कली प्यार से युवक को खिलाती है।

'कल्लो' उपन्यास में पर्वतांचल की पृष्ठभूमि में ग्रामीण जीवन की झाँकी देखने को मिलती है। इस उपन्यास में सहजता परिलक्षित होती है। यहाँ ग्रामीण लोग जो कुछ कहते हैं, वे

---

1. त्रिभुवन सिंह - उपन्यास शिल्प और प्रयोग, पृ. 286, 287.
2. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 72.

कर दिखाते है। यहाँ गाँव के लोगों का एक दूसरे पर पूरा विश्वास होता है। यहाँ के चौधरी को अपने गाँव के लोगों पर पूरा भरोसा दिखाई देता है। देखिए -''यह गाँव है! यहाँ पर जीवन की मान्यताओं पर बल दिया जाता है ... यह असली देवभूमि है। पवित्रता से ओतप्रोत गाँव ... शहरी रंगरलियों और धूर्त किस्म के कारनामों से हम दूर है। तभी तो यहाँ शांति है। सुख है। सद्भावना है। तभी पनपता है एक- दूसरे के प्रति प्रेम. छोटों के प्रति प्रेम, बडों के प्रति आदर सम्मान।''[1]

इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि गाँव के चौधरी को अपने गाँव के लोगों पर इतना विश्वास है कि उन्हें लगता है कि, शहर में जिस प्रकार अनेक घटनाएँ होती है, वहाँ लोगों पर विश्वास नहीं किया जाता। वहाँ तो कानून का ही लोगों को सहारा लेना पडता है। लेकिन गाँव के लोगों के लिए उनके संस्कार ही उनके लिए कानून है।

इस प्रकार 'कल्लो' उपन्यास में लेखक सुदर्शन भाटिया जी ने गाँव के लोगों के जीवन का तथा गाँव के प्राकृतिक दृश्य का जो चित्र खींचा है, वह प्रभावी बन पडा है। विवेच्य उपन्यास में पूर्वांचल पृष्ठभूमि में ग्रामीण जीवन की झाँकी देखने को मिलती है। गाँव चाहे देश के किसी भी प्रांत के हो चौधरी जैसे मुखिया के लाडले बेटे आतंक जमाते हुए दिखाई देते हैं। वे गाँव की लडकियों की छेड छाड करते रहते हैं। कैलाश के माध्यम से लेखक ने दुराचारी युवक और उसको दिए गए दंड की घटना पाठकों को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। अर्थात गाँव की सामाजिक स्थिति का हू-ब-हू वर्णन किया है। ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में लेखक को सफलता मिली है।

5.2 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में चित्रित परिवेश :

साहित्य में देशकाल वातावरण का महत्त्व असाधारण होता है। देशकाल में स्थान एवं समय की घटनाओं का चित्रण होता है। इसमें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत होता है। डॉ. श्यामसुंदर दास के मतानुसार, ''देशकाल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन और परिस्थितियाँ आदि से है।''[2] अत: कथ्य के दृष्टि से देशकाल वातावरण को तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

देशकाल को प्रकट करते समय रीति-रिवाज, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, संस्कृति और चालढाल का होना आवश्यक होता है। वातावरण उपन्यास की काल्पनिक कथावस्तु को

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 52.
2. डॉ. श्यामसुंदर दास - साहित्यालोचन, पृ. 172.

वास्तविकता प्रदान करता है। देशकाल वातावरण के वास्तविक चित्रणद्वारा उपन्यास रोचक सजीव एवं विश्वासनीय बनता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर काल का चित्रण है। इस उपन्यास में चित्रित परिवेश काफी हद तक नागरी दिखाई देता है। लेकिन हमारे देश की स्थिति स्वातंत्र्यपूर्व जैसी थी, वैसे ही आज भी दिखाई देती है। इसका परिचय हमें गिरीश के इस कथन से होता है - "मुझे फिल्मी जीवन से नफरत है। घृणा है। फिल्मी में काम करनेवाले परस्पर द्वेष की भावना की खाई में गले तक डूबे रहते हैं। वहाँ चरित्रहीनता का बोलबाला है। शराब पीना-पिलाना फेंशन है। लडकियाँ भी इससे अछूती नहीं रहती। किसी की अस्मत लूट लेना, किसी का शील भंग कर देना, केवल खेल समान है। रोजाना लुटती लडकियाँ देखीं, बिगडते लडके देखे। बूढों को नंगा नाचते देखा। चरित्र नाम की तो कोई चीज ही नहीं। चांदी की झंकार में, न इज्जत, न प्यार। देह भूख मिटाना ही उनका काम है।"[1] इससे यह स्पष्ट होता है, कि स्वतंत्रता के पश्चात भी हमारे देश में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी हमारे देश में नारीयों का शोषण होता हुआ दिखाई देता है।

इस उपन्यास के कुछ पात्र परंपरावादी प्रवृत्ति के दिखाई देते हैं। वे रस्म-रिवाजों को मानते हैं। अटल जी जब सुमन का रिश्ता लेकर गिरीश के घर जाते है, तब वहाँ वे अपनी बेटी के सुख के लिए जितना चाहे उतना दहेज देने के लिए तैयार हो जाते है। वे गिरीश के पिता से कहते है, "मैं आपको उन सबसे अधिक दूँगा, जो अब तक आपको कहा गया है। बस आपकी हाँ चाहिए। मैं आपको मालामाल कर दूँगा।"[2]

इस प्रकार इस कथन से यह स्पष्ट होता है, कि स्वतंत्रतापूर्व भारत में जैसी स्थिति थी, वैसी ही आज भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में दिखाई देती है। जो उच्च वर्ग के लोग होते हैं वे अपनी बेटी को जितना चाहे उतना दहेज दे सकते हैं, लेकिन जो गरीब लोग है जिनकी तीन-चार बेटियाँ है, उन्हें तो यह सब करना मुश्किल हो जाता है। और उन लडकियों पर उनके ससुरालवाले अन्याय तथा अत्याचार करते हुए दिखाई देते है। इस प्रकार दहेज प्रथा हमारे देश में भारत स्वतंत्र होने के पूर्व से चली आ रही है, जो अब भी दिखाई देती है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 21.
2. वही, पृ. 81.

भारत देश की तरह लंदन जैसे विदेशी शहर में भी पुरानी रूढि परंपरा और अंधविश्वास होता है। गिरीश का मित्र सतीश लंदन में पढता है। जब वो भारत आता है तब गिरीश उससे विदेशी संस्कृति के बारे में पूछता है, तब सतीश उसे बताता है, कि किस प्रकार वे आज भी लकीर के फकीर बने हुए हैं। किस प्रकार बेतुकी एवं बेसिर पैर की बातों में उन्होंने अपने रीति-रिवाज की मान लिया है। सतीश कहता है, कि - "पुराने समय में लंदन का 'पार्लियामेंण्ट हाऊस' शहर से बहुत दूर, बहुत बाहर था। रास्ता एक जंगल से होकर जाता था। हालात भी कुछ ऐसे थे कि पार्लियामेण्ट सैशन केवल रात का होता था।"[1] लेकिन आज जंगल खत्म है, शहर फैल चुका है। फिर भी वे लोग इसीप्रकार शोर हो हल्ला करते लौटते हैं। आज के युग में कितना बुरा लगता है। असभ्य सा। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि लंदन जैसे विदेशी शहर में भी हमारे भारत जैसी रूढि-परंपरा है। जहाँ वहाँ के भी सभी लोग मानते हुए दिखाई देते है। निष्कर्षता कहा जा सकता है, कि सुदर्शन भाटिया जी ने अपने 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को निरूपित किया है।

निष्कर्ष :-

उपन्यास की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सामाजिक एवं प्राकृतिक परिवेश का चित्रण आवश्यक होता है। देश काल एवं वातावरण की अन्विति को बनाने में लेखक सफल हुए हैं।

'कल्लो' उपन्यास में हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुषमा को चित्रित किया है। ग्रामीण जीवन की रूढ़ि एवं परंपरा को भी दर्शाया है। देहाती लोगों के पारस्पारिक विश्वास एवं निष्ठा का भी चित्रण किया है। 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर काल का चित्रण है। दहेज की प्रथा का यथास्थान चित्रण किया गया है। फिल्मी दुनिया, नारी शोषण को भी अंकित किया है।

सामाजिक परिवेश का चित्रण विवेच्य उपन्यासों की विशेषता है। समाज में स्थित रूढ़ि-परंपरा का भी भाटिया जी ने दोनों उपन्यासों में चित्रित किया है।

'कल्लो' उपन्यास में युवक (परदेसी) के माध्यम से ग्रामीण जीवन के सुधार की आवश्यकता एवं युवकों के महत्त्वपूर्ण योगदान को भी रेखांकित किया है। 'सुलगती बर्फ' में ग्रामीण इलाके में स्थित पुरानी परंपराओं को चित्रित किया है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 91.